९. जब तक जिंदा रहूँ, लिखता रहूँ

सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :
(१) कृति पूर्ण कीजिए:

अमृतलाल नागर जी के साहित्य सृजन में सहायक

लेखक	**१. सनेही जी**	**२. अयोध्यासिंह उपाध्याय**
पत्रिकाएँ	**१. सरस्वती**	**२. गृहलक्ष्मी**

उत्तर लिखिए : -
१. नागर जी की पहली कविता को प्रस्फुटित करने वाला अनुभव
उत्तर : सन 1928 – 1929 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के समय किए गए लाठी चार्ज के अनुभव ने नागर जी की पहली कविता को प्रस्फुटित किया।

२. नागर जी अपने पिता जी के इस गुण से प्रभावित थे
उत्तर : किसी के दुख-दर्द में तुरंत पहुँचने का गुण।

(३) कोष्ठक में दी गई नागर जी की साहित्य कृतियों का वर्गीकरण कीजिए :
[कब लौ कहीं लाठी खाय, खंजन नयन, अपशकुन, नाच्यो बहुत गोपाल, महाकाल, प्रायश्चित, गदर के फूल]

उत्तर :

कहानी	उपन्यास	कविता	अन्य
अपशकुन	नाच्यो बहुत गोपाल महाकाल खंजन नयन	कब लौं कहौं लाठी खाय	गदर के फूल

(४) कृति पूर्ण कीजिए :
नागर जी के समकालीन साहित्यकार
उत्तर : १) जगन्नाथदास रत्नाकर
२) शरतचंद्र
३) प्रेमचंद
४) माधव शुक्ल
(५) लिखिए:
१. कार्य
१) आलोचक - **समीक्षा करना**
२) रचनाकार - **रचना करना**

२. नागर जी के प्रिय विदेशी लेखक
उत्तर : १) टॉल्स्टॉय
२) चेखव

(६) एक शब्द में उत्तर लिखिए :

१. नागर जी के प्रिय लेखक
उत्तर : रामविलास शर्मा।

२. नागर जी के प्रिय आलोचक -
उत्तर : पाठकीय प्रतिक्रिया देने वाले पत्र लेखन

३. अपनी इस रचना के लिए नागर जी को बहुत लोगोंसे मिलना पड़ा
उत्तर : गदर के फूल।

४. नागर जी का पहला उपन्यास
उत्तर :नाम - महाकाल प्रकाशन वर्ष - 1944

(७) लिखिए
(अ) तद्धित शब्दों का मूल शब्द :
१. साहित्यिक = **साहित्य**
२. विलायती = **विलायत**

(ब) कृदंत शब्दों का मूल शब्द :

१. खिंचाव = **खिंच + आव**
२. लिखावट = **लिख + आवट**

(८) उचित जोड़ियाँ मिलाइए।

अ' रचना	**'ब' रचनाकार**
१. देसी और विलायती	अमृतलाल नागर
२. अपशकुन	तुलसीदास
३. आनंद मठ	प्रभात कुमार मुखोपाध्याय बंकिमचंद्र चटर्जी
४. रामचरितमानस	सूरदास

उत्तर :

अ' रचना	**उत्तर :**
१. देसी और विलायती	**प्रभात कुमार मुखोपाध्याय**
२. अपशकुन	**बंकिमचंद्र चटर्जी**

३. आनंद मठ	**अमृतलाल नागर**
४. रामचरितमानस	**बंकिमचंद्र चटर्जी**

'ज्ञान तथा आनंद प्राप्ति का साधन :
वाचन' पर अपने विचार लिखिए।'

उत्तर : कहते हैं, पुस्तक मनुष्य का सबसे बड़ा मित्र होती है। पुस्तकों में ज्ञान भरी बातें होती हैं। किताबों में संचित ज्ञान हमारे लिए सहायक होता है। विभिन्न विचारकों, लेखकों तथा महान व्यक्तियों के विचार पुस्तकों में ही संग्रहित होते हैं। हमारे यहाँ साहित्य, तकनीक, विज्ञान, धर्म, राजनीति आदि सभी विषयों से संबंधित पुस्तकें उपलभ्य हैं। आवश्यकता है इन्हें पढ़ने में रुचि रखने की। पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान प्राप्ति के साथ-साथ अद्‌भुत आनंद की प्राप्ति होती है। कोई भी मनुष्य हर दृष्टि से परिपूर्ण नहीं होता। मनुष्य बहुत सारी बातें देख-सुन और पढ़कर सीखता है। विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों से ज्ञानार्जन करता है। बड़े होने पर इन पुस्तकों से उसका काम नहीं चलता। उसे ज्ञानार्जन के लिए और खुराक की आवश्यकता होती है। वह अपने पसंद वाले विषयों की पुस्तकें पढ़ता है। आई.सी.एस., आई.पी.एस. तथा आई.ए.एस. जैसी बड़ी-बड़ी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए भी वाचन की आवश्यकता होती है। पुस्तकों में क्या नहीं है? इसमें जो जितने गोते लगाता है, उसे उतना ही ज्ञान प्राप्त होता है।